अनुक्रम

1.	जैनदर्शने स्याद्वादः	–माणिक्यचन्द्रः कौन्देयो न्यायाचार्यः	1
2.	न्यायदर्शनरीत्या स्याद्वादसमाक्षा	–प्रो. पीयूषकान्तदीक्षितः	9
3.	जैनागमेषु स्याद्वादः वेदान्तश्च	–प्रो. शुद्धानन्दपाठकः	16
4.	काश्मीरशैवदर्शनदिशा स्याद्वाद-समीक्षणम्	–प्रो. हरेरामत्रिपाठी	20
5.	भारतीयतत्त्वचिन्तने अनेकान्तवादः तत्खण्डनञ्च	–डॉ. महानन्दझाः	25
6.	तार्किकदृष्ट्या स्याद्वादसमालोचना	–डॉ. रामचन्द्रशर्मा	29
7.	साङ्ख्ययोगदर्शने स्याद्वादः	–डॉ. रविशंकरशुक्लः	35
8.	स्याद्वादस्य श्रीशाङ्करभाष्यदिशा समीक्षणम्	–डॉ प्रभाकरप्रसादः	39
9.	समन्वयवादः स्याद्वादः	–डॉ. जवाहरलालः	43
10.	स्याद्वादसन्दर्भे नैयायिकानां दृष्टिः	–डॉ. विष्णुपदमहापात्रः	51
11.	विरोधमथनं नमाम्यनेकान्तम्	–डॉ. अनेकान्तकुमारो जैनः	55
12.	आप्तमीमांसायां स्याद्वादः	–प्रतापः	67
13.	विभिन्नक्षेत्रेषु स्याद्वादः	–सत्यवान्	72
14.	जैनदर्शने स्याद्वादस्य विमर्शः	–दीपककुमारद्विवेदी	77
15.	अनेकान्त की व्यापकता	–प्रो. दयानन्द भार्गव	82
16.	अनेकान्तवाद का स्वरूप और उसके तार्किक आधार	–प्रो. धर्मचन्द जैन	94

17. वाचिक सहिष्णुता का सिद्धान्त 'स्याद्वाद' —प्रो. सुदीप जैन 110
18. स्याद्वाद और विशिष्टाद्वैत —प्रो. केदारप्रसाद परोहा 119
19. जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में स्याद्वाद —प्रो. महेशप्रसाद सिलौड़ी 122
20. स्याद्वाद : दृष्टान्त के प्रयोग —साध्वी साधना 125
21. शास्त्रीय संगीत एवं स्याद्वाद —डॉ. जयकुमार उपाध्ये 131
22. स्याद्वाद के अनूठे प्रयोग —डॉ. राकेश जैन शास्त्री 139
23. आधुनिक विज्ञान में स्याद्वाद का प्रयोग—डॉ. संजय शाह 151
24. समस्याओं के समाधान में स्याद्वाद की भूमिका —डॉ. ममता जैन 155
25. अनेकान्त-स्याद्वाद का स्वरूप : महाप्रज्ञ के विशेष संदर्भ में —डॉ. योगेश कुमार जैन 160
26. बीसवीं शताब्दी के प्रमुख जैनाचार्यों के चिन्तन में स्याद्वाद —रामनरेश जैन 165
27. स्याद्वाद का व्यापक दृष्टिकोण —अरिहन्त कुमार जैन 172
28. अनेकान्त एवं स्याद्वाद : स्वरूप-विवेचन —डॉ. कल्पना जैन 180
29. अनेकान्त-स्याद्वाद पर उपलब्ध सामग्री —डॉ. कुलदीप कुमार 187
30. अनेकान्त तथा स्याद्वाद —डॉ. देवेन्द्र प्रसाद मिश्र 193
31. आचार्य अकलंक के ग्रन्थों में स्याद्वाद —अजेश कुमार जैन 196

32.	प्राकृत-साहित्य में स्याद्वाद	–दिनेश	199
33.	जैन दर्शन में स्याद्वाद की उपयोगिता	–सियंका शर्मा	202
34.	'तत्त्वार्थराजवार्तिक' में स्याद्वाद	–प्रेमलता	206
35.	जैनदर्शन में स्याद्वाद का स्वरूप	–कविता देवी	211
36.	स्याद्वाद में 'स्यात्' पद का औचित्य	–रवि गुरैया	216
37.	स्याद्वाद : निष्पक्ष विद्वानों की दृष्टि में	–प्रो. वीरसागर जैन	222

पक्षपातो न मे वीरे न द्वेषः कपिलादिषु।
युक्तिमद्वचनं यस्य तस्य कार्यः परिग्रहः॥

मुझे महावीर जिनेन्द्र से कोई पक्षपात नहीं है और अन्य कपिलादि से कोई द्वेष नहीं है, परन्तु जिसके वचन युक्तिसंगत हों उसी का ग्रहण करना चाहिए।

–हरिभद्रसूरि, लोकतत्त्वनिर्णय, 1.38